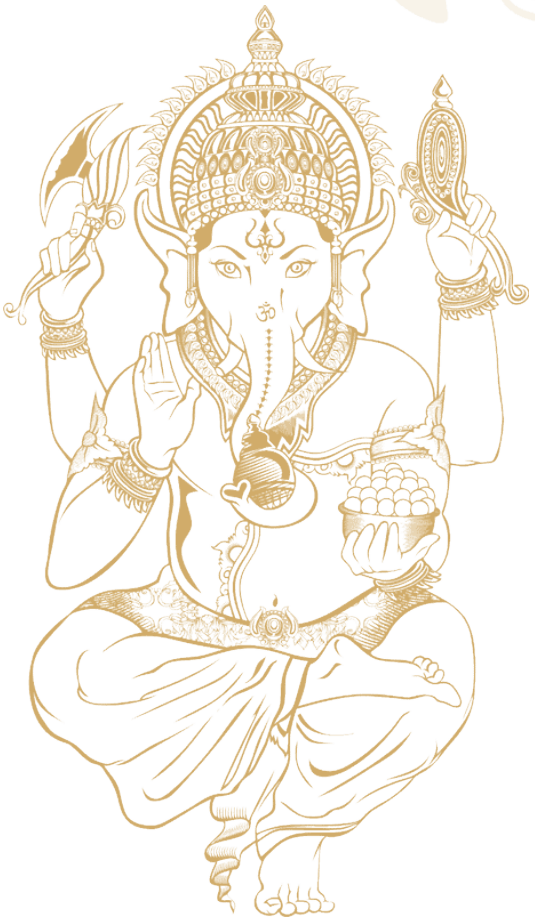

Mr.indrajeet patil

27 Jan 1986

07:20 PM

Tasgaon

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121069901**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**27/01/1986**
दिवस	सोमवार
जन्म समय	**19:20:19 कला**
इष्ट	30:40:31 घटी
स्थान	**Tasgaon**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	17:04:00 उत्तर
रेखांश	74:41:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:31:16 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	18:49:03 कला
वेलान्तर	-00:12:44 कला
साम्पातिक वेल	03:15:14 कला
सूर्योदय	07:04:06 कला
सूर्यास्त	18:23:58 कला
दिनमान	11:19:52 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्याचे अंश	13:40:19 मकर
लग्नाचे अंश	27:18:51 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कर्क – चन्द्र
राशि–स्वामी	**सिंह – रवि**
नक्षत्र–चरण	**मघा – 1**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	सौभाग्य
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	उंदीर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	उंदीर
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मा–माणिक
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	माघ	7
पंजाबी	संवत : 2042	माघ	14
बंगाली	सन् : 1392	माघ	13
तमिल	संवत : 2042	थाई	14
केरल	कोल्लम : 1161	मकरम	14
नेपाली	संवत : 2042	माघ	14
चैत्रादी	संवत : 2042	माघ	कृष्ण 2
कार्तिकादी	संवत : 2042	पौष	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति वेल _____: 29:31:28
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 14:53:10 कला
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय समयी योग _____: आयुष्मान
योग समाप्ति वेल _____: 09:00:19 कला
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय समयी करण _____: तैतिल
करण समाप्ति वेल _____: 17:47:58 कला
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 11:07:51
भभोग _____: 60:03:08
भोग्य दशा वेल _____: केतु 5 वर्ष 8 मा 15 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: मीन
रवि _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगळ _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

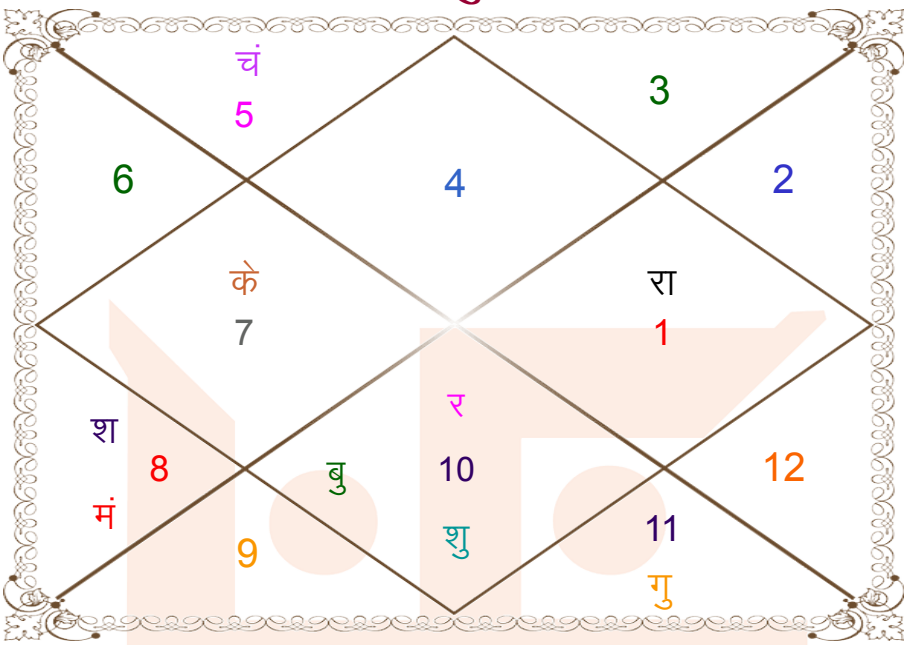

चन्द्र कुंडली

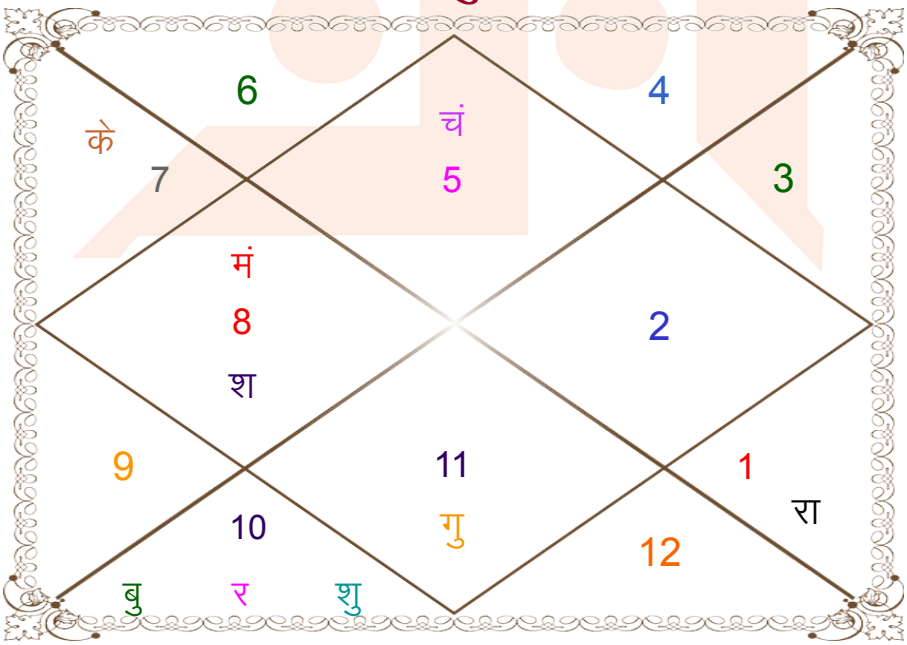

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

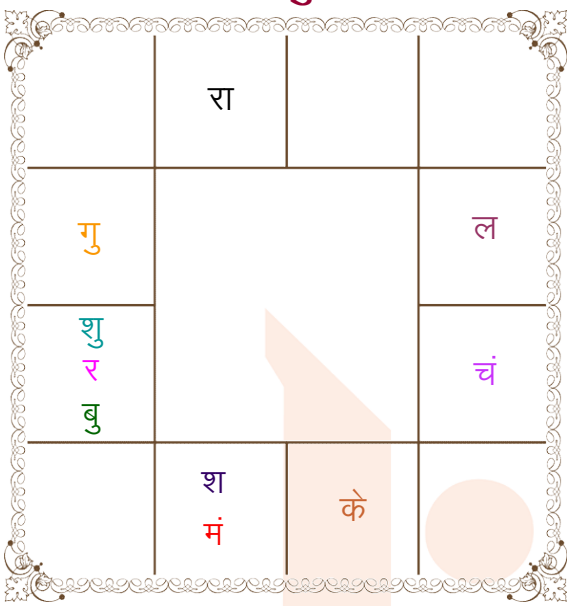

लग्न कुंडली

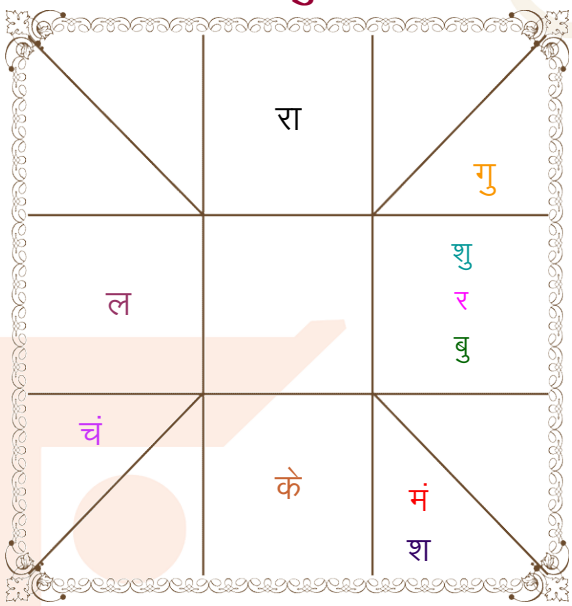

विंशोत्तरी

केतु 5वर्ष 8मा 15दि

केतु

27/01/1986

14/10/2104

केतु	14/10/1991
शुक्र	14/10/2011
रवि	13/10/2017
चन्द्र	14/10/2027
मंगळ	14/10/2034
राहु	13/10/2052
गुरु	13/10/2068
शनि	14/10/2087
बुध	14/10/2104

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 0मा 28दि

भद्रिका

25/02/2021

25/02/2026

भद्रिका	05/11/2021
उल्का	06/09/2022
सिद्धा	27/08/2023
संकटा	06/10/2024
मंगळा	25/11/2024
पिंगला	07/03/2025
धान्या	06/08/2025
भ्रामरी	25/02/2026

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	27:18:51	333:10:14	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	———
सूर्य			मक	13:40:19	01:00:57	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	02:27:25	13:15:44	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	मित्र राशि
मंगळ			वृश्चि	02:57:42	00:35:44	विशाखा	4	16	मंगळ	गुरु	राहु	स्वगृही
बुध		अ	मक	10:35:31	01:40:45	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	सम राशि
गुरु			कुंभ	00:35:19	00:14:06	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगळ	बुध	सम राशि
शुक्र		अ	मक	15:34:01	01:15:21	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	13:57:22	00:04:41	अनुराधा	4	17	मंगळ	शनि	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		मेष	10:24:33	00:12:13	अश्विनी	4	1	मंगळ	केतु	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	10:24:33	00:12:13	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	गुरु	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	27:15:00	00:02:48	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	गुरु	———
नेप			धनु	10:52:47	00:01:59	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	———
प्लूटो			तुला	13:39:24	00:00:27	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	———
दशम भाव			मेष	27:34:40	--	कृतिका	--	3	मंगळ	सूर्य	चंद्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:39:37

लग्न–चलित

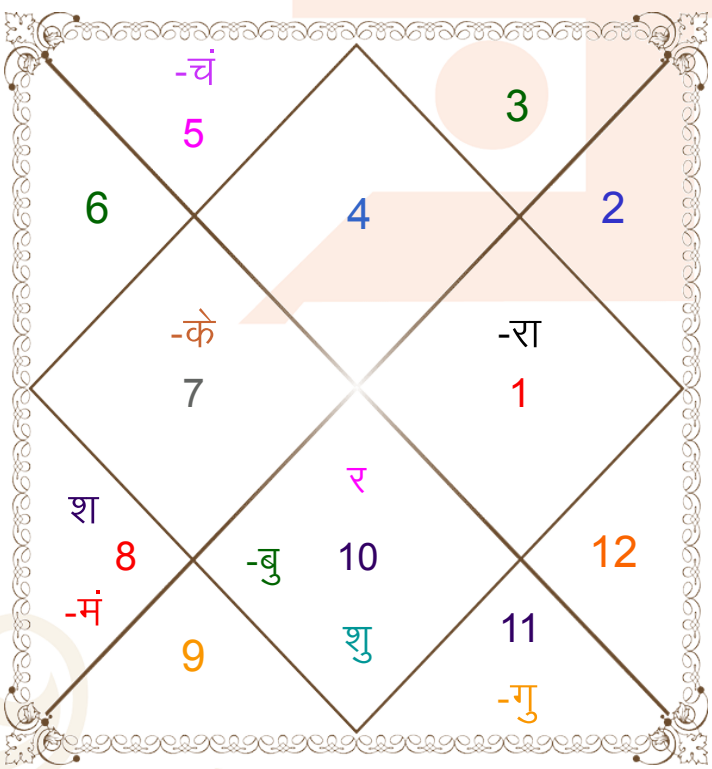

चन्द्र कुंडली

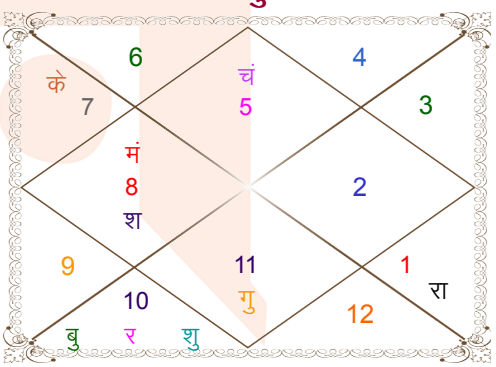

नवमांश कुंडली

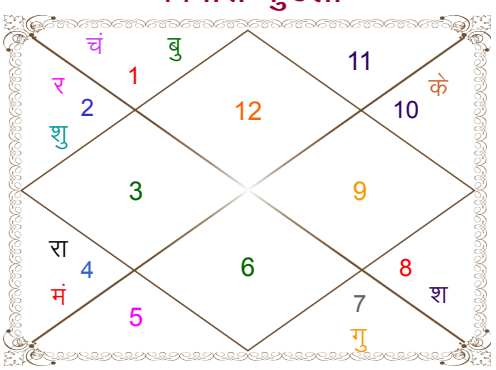

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	12:21:29	कर्क	27:18:51
2	सिंह	12:21:29	सिंह	27:24:07
3	कन्या	12:26:45	कन्या	27:29:24
4	तुला	12:32:02	तुला	27:34:40
5	वृश्चिक	12:32:02	वृश्चिक	27:29:24
6	धनु	12:26:45	धनु	27:24:07
7	मकर	12:21:29	मकर	27:18:51
8	कुम्भ	12:21:29	कुम्भ	27:24:07
9	मीन	12:26:45	मीन	27:29:24
10	मेष	12:32:02	मेष	27:34:40
11	वृषभ	12:32:02	वृषभ	27:29:24
12	मिथुन	12:26:45	मिथुन	27:24:07

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	27:18:51
2	सिंह	25:09:12
3	कन्या	25:51:53
4	तुला	27:34:40
5	वृश्चिक	28:22:31
6	धनु	28:04:22
7	मकर	27:18:51
8	कुम्भ	25:09:12
9	मीन	25:51:53
10	मेष	27:34:40
11	वृषभ	28:22:31
12	मिथुन	28:04:22

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

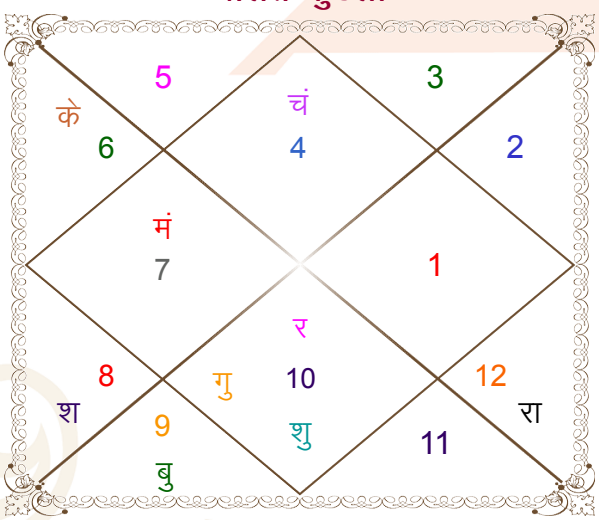

भाव कुंडली

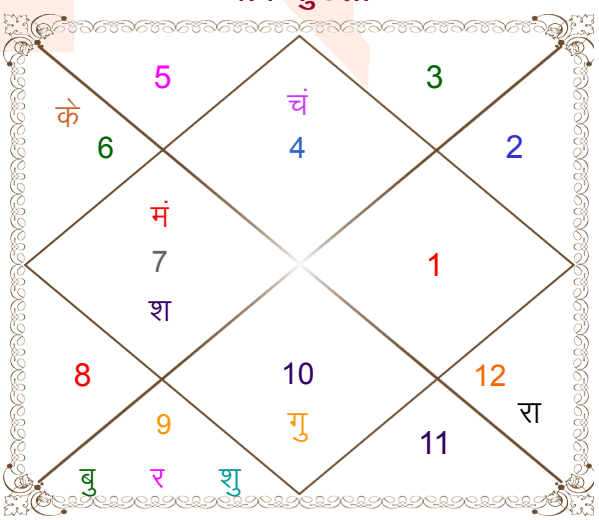

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	युवा	खल	नृत्यलिप्सा	5.20	48 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	बाल	मुदित	प्रकाश	4.53	63 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	मृत	स्वस्थ	आगम	3.96	45 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	निद्रा	0.00	30 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	निपीदित	नेत्रपाणि	1.19	57 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	युवा	विकल	आगम	6.43	70 %
शनि	अमात्य	आयुष्य	युवा	खल	नेत्रपाणि	1.73	56 %
राहु	———	ज्ञान	कुमार	खल	प्रकाश	0.00	14 %
केतु	———	मोक्ष	कुमार	शक्त	आगम	0.00	14 %
एकुण						**23.05**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

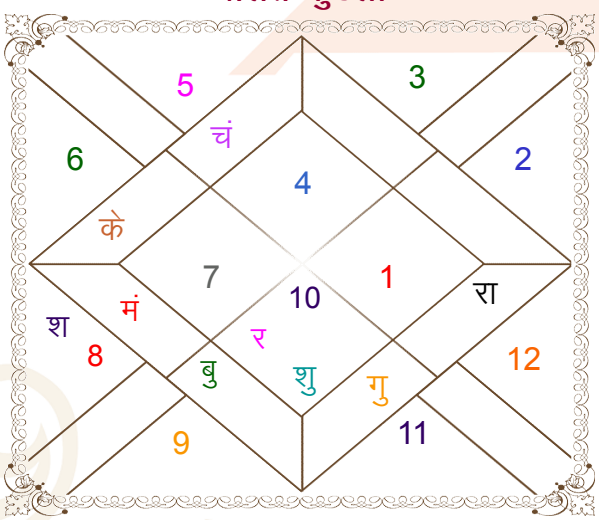

लग्न–चलित

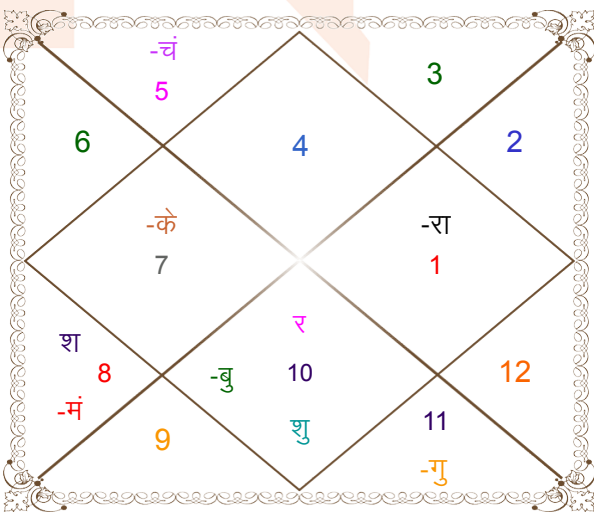

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : केतु 5 वर्ष 8 महिना 15 दिवस

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष	
27/01/1986		14/10/1991		14/10/2011		13/10/2017		14/10/2027	
14/10/1991		14/10/2011		13/10/2017		14/10/2027		14/10/2034	
	27/01/1986	शुक्र	12/02/1995	सूर्य	01/02/2012	चंद्र	14/08/2018	मंगळ	11/03/2028
शुक्र	11/05/1986	सूर्य	13/02/1996	चंद्र	01/08/2012	मंगळ	15/03/2019	राहु	30/03/2029
सूर्य	16/09/1986	चंद्र	13/10/1997	मंगळ	07/12/2012	राहु	13/09/2020	गुरु	05/03/2030
चंद्र	17/04/1987	मंगळ	14/12/1998	राहु	01/11/2013	गुरु	13/01/2022	शनि	14/04/2031
मंगळ	13/09/1987	राहु	13/12/2001	गुरु	20/08/2014	शनि	14/08/2023	बुध	11/04/2032
राहु	01/10/1988	गुरु	13/08/2004	शनि	02/08/2015	बुध	12/01/2025	केतु	07/09/2032
गुरु	07/09/1989	शनि	14/10/2007	बुध	07/06/2016	केतु	14/08/2025	शुक्र	07/11/2033
शनि	17/10/1990	बुध	14/08/2010	केतु	13/10/2016	शुक्र	14/04/2027	सूर्य	15/03/2034
बुध	14/10/1991	केतु	14/10/2011	शुक्र	13/10/2017	सूर्य	14/10/2027	चंद्र	14/10/2034

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
14/10/2034		13/10/2052		13/10/2068		14/10/2087		14/10/2104	
13/10/2052		13/10/2068		14/10/2087		14/10/2104		00/00/0000	
राहु	26/06/2037	गुरु	01/12/2054	शनि	17/10/2071	बुध	12/03/2090	केतु	12/03/2105
गुरु	19/11/2039	शनि	14/06/2057	बुध	26/06/2074	केतु	09/03/2091	शुक्र	28/01/2106
शनि	25/09/2042	बुध	20/09/2059	केतु	05/08/2075	शुक्र	07/01/2094		00/00/0000
बुध	14/04/2045	केतु	25/08/2060	शुक्र	05/10/2078	सूर्य	13/11/2094		00/00/0000
केतु	02/05/2046	शुक्र	26/04/2063	सूर्य	17/09/2079	चंद्र	14/04/2096		00/00/0000
शुक्र	02/05/2049	सूर्य	13/02/2064	चंद्र	17/04/2081	मंगळ	11/04/2097		00/00/0000
सूर्य	27/03/2050	चंद्र	14/06/2065	मंगळ	27/05/2082	राहु	29/10/2099		00/00/0000
चंद्र	26/09/2051	मंगळ	21/05/2066	राहु	02/04/2085	गुरु	04/02/2102		00/00/0000
मंगळ	13/10/2052	राहु	13/10/2068	गुरु	14/10/2087	शनि	14/10/2104		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल केतु 5 वर्ष 8 मा 13 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु	
14/08/2025		14/04/2027		14/10/2027		11/03/2028		30/03/2029	
14/04/2027		14/10/2027		11/03/2028		30/03/2029		05/03/2030	
शुक्र	23/11/2025	सूर्य	23/04/2027	मंगळ	23/10/2027	राहु	08/05/2028	गुरु	14/05/2029
सूर्य	23/12/2025	चंद्र	09/05/2027	राहु	14/11/2027	गुरु	28/06/2028	शनि	07/07/2029
चंद्र	12/02/2026	मंगळ	19/05/2027	गुरु	04/12/2027	शनि	27/08/2028	बुध	24/08/2029
मंगळ	20/03/2026	राहु	16/06/2027	शनि	28/12/2027	बुध	21/10/2028	केतु	13/09/2029
राहु	19/06/2026	गुरु	10/07/2027	बुध	18/01/2028	केतु	12/11/2028	शुक्र	09/11/2029
गुरु	08/09/2026	शनि	08/08/2027	केतु	26/01/2028	शुक्र	15/01/2029	सूर्य	26/11/2029
शनि	14/12/2026	बुध	03/09/2027	शुक्र	20/02/2028	सूर्य	03/02/2029	चंद्र	24/12/2029
बुध	10/03/2027	केतु	13/09/2027	सूर्य	28/02/2028	चंद्र	07/03/2029	मंगळ	13/01/2030
केतु	14/04/2027	शुक्र	14/10/2027	चंद्र	11/03/2028	मंगळ	30/03/2029	राहु	05/03/2030

मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य	
05/03/2030		14/04/2031		11/04/2032		07/09/2032		07/11/2033	
14/04/2031		11/04/2032		07/09/2032		07/11/2033		15/03/2034	
शनि	09/05/2030	बुध	05/06/2031	केतु	19/04/2032	शुक्र	17/11/2032	सूर्य	13/11/2033
बुध	05/07/2030	केतु	26/06/2031	शुक्र	14/05/2032	सूर्य	08/12/2032	चंद्र	24/11/2033
केतु	29/07/2030	शुक्र	25/08/2031	सूर्य	22/05/2032	चंद्र	12/01/2033	मंगळ	01/12/2033
शुक्र	04/10/2030	सूर्य	12/09/2031	चंद्र	03/06/2032	मंगळ	06/02/2033	राहु	20/12/2033
सूर्य	24/10/2030	चंद्र	12/10/2031	मंगळ	12/06/2032	राहु	11/04/2033	गुरु	07/01/2034
चंद्र	27/11/2030	मंगळ	03/11/2031	राहु	04/07/2032	गुरु	07/06/2033	शनि	27/01/2034
मंगळ	21/12/2030	राहु	27/12/2031	गुरु	24/07/2032	शनि	14/08/2033	बुध	14/02/2034
राहु	19/02/2031	गुरु	13/02/2032	शनि	17/08/2032	बुध	13/10/2033	केतु	21/02/2034
गुरु	14/04/2031	शनि	11/04/2032	बुध	07/09/2032	केतु	07/11/2033	शुक्र	15/03/2034

मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
15/03/2034		14/10/2034		26/06/2037		19/11/2039		25/09/2042	
14/10/2034		26/06/2037		19/11/2039		25/09/2042		14/04/2045	
चंद्र	01/04/2034	राहु	11/03/2035	गुरु	21/10/2037	शनि	02/05/2040	बुध	04/02/2043
मंगळ	14/04/2034	गुरु	20/07/2035	शनि	09/03/2038	बुध	27/09/2040	केतु	31/03/2043
राहु	16/05/2034	शनि	23/12/2035	बुध	11/07/2038	केतु	26/11/2040	शुक्र	02/09/2043
गुरु	13/06/2034	बुध	11/05/2036	केतु	31/08/2038	शुक्र	19/05/2041	सूर्य	18/10/2043
शनि	17/07/2034	केतु	07/07/2036	शुक्र	24/01/2039	सूर्य	10/07/2041	चंद्र	04/01/2044
बुध	16/08/2034	शुक्र	19/12/2036	सूर्य	09/03/2039	चंद्र	05/10/2041	मंगळ	27/02/2044
केतु	29/08/2034	सूर्य	06/02/2037	चंद्र	21/05/2039	मंगळ	04/12/2041	राहु	16/07/2044
शुक्र	03/10/2034	चंद्र	29/04/2037	मंगळ	11/07/2039	राहु	10/05/2042	गुरु	17/11/2044
सूर्य	14/10/2034	मंगळ	26/06/2037	राहु	19/11/2039	गुरु	25/09/2042	शनि	14/04/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ	
14/04/2045		02/05/2046		02/05/2049		27/03/2050		26/09/2051	
02/05/2046		02/05/2049		27/03/2050		26/09/2051		13/10/2052	
केतु	06/05/2045	शुक्र	01/11/2046	सूर्य	19/05/2049	चंद्र	11/05/2050	मंगळ	18/10/2051
शुक्र	09/07/2045	सूर्य	26/12/2046	चंद्र	15/06/2049	मंगळ	12/06/2050	राहु	15/12/2051
सूर्य	28/07/2045	चंद्र	27/03/2047	मंगळ	04/07/2049	राहु	03/09/2050	गुरु	04/02/2052
चंद्र	29/08/2045	मंगळ	30/05/2047	राहु	22/08/2049	गुरु	15/11/2050	शनि	04/04/2052
मंगळ	21/09/2045	राहु	10/11/2047	गुरु	05/10/2049	शनि	09/02/2051	बुध	29/05/2052
राहु	17/11/2045	गुरु	04/04/2048	शनि	26/11/2049	बुध	28/04/2051	केतु	20/06/2052
गुरु	07/01/2046	शनि	25/09/2048	बुध	12/01/2050	केतु	30/05/2051	शुक्र	23/08/2052
शनि	09/03/2046	बुध	27/02/2049	केतु	31/01/2050	शुक्र	29/08/2051	सूर्य	11/09/2052
बुध	02/05/2046	केतु	02/05/2049	शुक्र	27/03/2050	सूर्य	26/09/2051	चंद्र	13/10/2052

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
13/10/2052		01/12/2054		14/06/2057		20/09/2059		25/08/2060	
01/12/2054		14/06/2057		20/09/2059		25/08/2060		26/04/2063	
गुरु	25/01/2053	शनि	27/04/2055	बुध	09/10/2057	केतु	09/10/2059	शुक्र	04/02/2061
शनि	28/05/2053	बुध	05/09/2055	केतु	26/11/2057	शुक्र	05/12/2059	सूर्य	25/03/2061
बुध	16/09/2053	केतु	29/10/2055	शुक्र	13/04/2058	सूर्य	22/12/2059	चंद्र	14/06/2061
केतु	31/10/2053	शुक्र	31/03/2056	सूर्य	25/05/2058	चंद्र	20/01/2060	मंगळ	09/08/2061
शुक्र	10/03/2054	सूर्य	16/05/2056	चंद्र	02/08/2058	मंगळ	09/02/2060	राहु	03/01/2062
सूर्य	18/04/2054	चंद्र	02/08/2056	मंगळ	19/09/2058	राहु	31/03/2060	गुरु	12/05/2062
चंद्र	22/06/2054	मंगळ	25/09/2056	राहु	21/01/2059	गुरु	15/05/2060	शनि	14/10/2062
मंगळ	06/08/2054	राहु	10/02/2057	गुरु	11/05/2059	शनि	08/07/2060	बुध	01/03/2063
राहु	01/12/2054	गुरु	14/06/2057	शनि	20/09/2059	बुध	25/08/2060	केतु	26/04/2063

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि	
26/04/2063		13/02/2064		14/06/2065		21/05/2066		13/10/2068	
13/02/2064		14/06/2065		21/05/2066		13/10/2068		17/10/2071	
सूर्य	11/05/2063	चंद्र	24/03/2064	मंगळ	04/07/2065	राहु	29/09/2066	शनि	05/04/2069
चंद्र	04/06/2063	मंगळ	22/04/2064	राहु	24/08/2065	गुरु	24/01/2067	बुध	08/09/2069
मंगळ	21/06/2063	राहु	04/07/2064	गुरु	08/10/2065	शनि	12/06/2067	केतु	11/11/2069
राहु	04/08/2063	गुरु	07/09/2064	शनि	01/12/2065	बुध	14/10/2067	शुक्र	13/05/2070
गुरु	12/09/2063	शनि	23/11/2064	बुध	18/01/2066	केतु	04/12/2067	सूर्य	07/07/2070
शनि	29/10/2063	बुध	31/01/2065	केतु	07/02/2066	शुक्र	28/04/2068	चंद्र	07/10/2070
बुध	09/12/2063	केतु	28/02/2065	शुक्र	05/04/2066	सूर्य	11/06/2068	मंगळ	10/12/2070
केतु	26/12/2063	शुक्र	20/05/2065	सूर्य	22/04/2066	चंद्र	23/08/2068	राहु	23/05/2071
शुक्र	13/02/2064	सूर्य	14/06/2065	चंद्र	21/05/2066	मंगळ	13/10/2068	गुरु	17/10/2071

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	9
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिवस	मंगळ, सोम, गुरू
शुभ ग्रह	मंगळ, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृषभ
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुष्कराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	पीला
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पोवले	मंगळ	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	89%	धन, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	73%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	64%	सुख, दम्पति
हीरा	शुक्र	61%	दम्पति, धनार्जन, सुख
माणिक्य	सूर्य	56%	दम्पति, धन
पुष्कराज	गुरु	44%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, नेष्ट भाग्य
पन्ना	बुध	6%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	सन्तति कष्ट, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

रत्न की शुभता

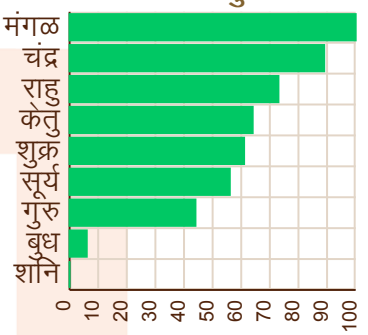

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	14/10/1991	38%	77%	100%	6%	44%	67%	0%	61%	77%
शुक्र	14/10/2011	38%	77%	100%	19%	44%	73%	9%	80%	70%
सूर्य	13/10/2017	69%	95%	100%	6%	53%	47%	0%	61%	52%
चंद्र	14/10/2027	62%	100%	100%	19%	44%	61%	0%	61%	52%
मंगळ	14/10/2034	62%	95%	100%	0%	53%	61%	0%	61%	70%
राहु	13/10/2052	38%	77%	98%	6%	44%	67%	9%	86%	52%
गुरु	13/10/2068	62%	95%	100%	0%	59%	47%	0%	73%	64%
शनि	14/10/2087	38%	77%	98%	19%	44%	67%	22%	80%	52%
बुध	14/10/2104	62%	77%	100%	31%	44%	67%	0%	73%	64%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	27/01/1986-17/12/1987	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टमस्थान चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
अष्टमस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थस्थान चरण	सम	सन्तति कष्ट
अष्टमस्थान चरण	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसातीचा पहला चरण	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	धन
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	पराक्रम

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समय मधे मंगळ ची स्थिति चंद्र कुंडली पासून चतुर्थ भाव मधे आहे. अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहात मंगळ तुम्हाला अशुभ फळा चा तुलनेने शुभ फळ जास्ती देणार. यांचा शुभ प्रभाव पासून तुमचा स्वास्थ्य चांगला रहणार तुमचे जीवन मधे सुखाचा साधन सुसंपन्न रहणार तसेच प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करणारे, बायको चा स्वास्थ्य पण चांगला रहणार ज्या मुळे दंपती जीवन सुखी होणार. असा मंगळ चा प्रभाव पासून तुमचे विवाह काही उशीर होणार पण काही प्रकारांची त्रास नाय होणारी तसेच विवाह सुखद वातावरण मधे होणार विवाहा चे नंतर समान संसर्ग होणार बायको चा शारीरिक स्वास्थ्य पण बरा होणार चंद्र कुंडली मधे चतुर्थ भावात स्थित मंगळ चा प्रभाव पासून आपण आवश्यक सुख साधन युक्त होउन यांचा उपभोग करणारे. आणि संपत्ति किंवा जायदाद पण प्राप्त करणारे, सप्तम भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून बायको चा स्वास्थ्य चांगला रहणार पण कधीं–मधीं स्वभावात उग्रता येणार दशम भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे आपण कार्य सफळ करणारे आणि समाजातील मान सम्मान यश तसेच ख्याति पण एकत्रित करणारे. एकादश भाव वर मंगळ दृष्टि होण्या पासून आर्थिक स्थिति बरी होणारी अतः सर्व सुख संपन्न रहणारे आणि जीवन प्रसन्नता युद्ध व्यतीत होणार. तुमचे दांपत्य जीवनाला जास्ती सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला कोणी मांगळिक शिवाय किंवा असी कन्या पासून विवाह करायला पाहिजे ज्यांचा मांगळिक दोष नियम पासून भंग असेल. जर आपण ह्या प्रकारी दांपत्य जीवन शुरू करणारे तर आपण जीवन पर्यन्त भाग्य शाली पुरुष होउन सर्व भौतिक सुख–साधनां चा आणि वैभव तसेच सम्मान कीर्ति प्राप्त कराय साठी सफळ रहणारे. कोणी पण जास्ती त्रस नाय होणार आणि दांपत्य जीवनात परस्पर सम्बन्ध ठोस रहणार, आणि सुखी दांपत्य जीवन प्रभावित होतात. ही गोष्ठ पण लक्षत ठेवाय ला पाहिजे, कीं कन्या ची कुंडळी मधे मंगळ चतुर्थ भावात पण नाय पाहिजेत, कारण कि समान भावात मंगळ स्थित होण्या मुळे आपण सुख साधन प्राप्त करायला त्रस अनुभव करणारे ज्या मुळे मनाची स्थित मधे अशान्ती होतात, आणि सुखी दांपत्य जीवन प्रभावित होतात. इतर भावात मंगळ रहण्या पासून यांचे प्रभाव शुभ रहणार आणि जीवनात फोकट अडचण त्रस नाही होणार तसेच दांपत्य जीवन शांत आणि सुखी रहणार आणि प्रसन्नता युद्ध स्वतः चा सांसारिक सामाजिक तसेच पारिवारिक जीवनां साठी सफल रहणारे. अतः पूर्ण सावध होडन लक्षत ठेवा आणि नंतर निर्णय

करा तसेच दांपत्य जीवन शुरू करावे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में चन्द्र और मंगळ के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है,और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टो में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते है, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यहीं कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते है। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं सेकष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता हैं। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ट भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव हैं। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता हैं। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्टेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता हैं। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्ठम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता हैं।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का

कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म कर्क लग्नी झाला आहे, त्यामुळे तुम्ही स्वभावतः शांत असाल, पण चंचल वृत्ती असेल. आपण हाती घेतलेली शुभ तसेच कोणतीही महत्वाची कामे घ्ढनिश्चयाने पूर्ण करणे हा तुमचा व्यक्तीविशेष असेल. एक भावुक प्रकृतीची व्यक्ती असल्याने इतरांप्रती आपल्या मनामध्ये प्रेम व स्नेहभाव कायम असेल. दिसायला सुंदर व मोहक असाल तसेच वाणीमध्ये माधुर्य असेल, ज्यामुळे सर्व लोक प्रभावीत होऊन आपल्याला यथायोग्य सन्मान प्रदान करतील.

आयुष्यात भौतिक सुखसाधने प्राप्त करून त्याचा उपभोग घ्याल. धनऐश्वर्य व वैभवयुक्त असाल. धर्मावर श्रद्धा असेल नियमित धार्मिक कार्ये संपन्न कराल. समाजाची सेवा व मदत करण्यास तत्पर असाल. मिष्ठान्न भक्षण किंवा मद्यपानाविषयी तीव्र इच्छा असेल आणि त्याचा उपभोगाने संतुष्ट राहाल. बुद्धिमान असल्याने इतरेजनांच्या मनातील विचार समजून घेण्यास तत्पर असाल आणि त्यांनी त्यांचा भावना प्रकट करण्यापूवीच तुम्ही सांगितल्यामुळे लोक अतिशय प्रभावित होतील.

अत्यंत भावुक प्रवृत्ती असेल, आणि निसर्ग किंवा काव्याप्रति मनामध्ये आकर्षण असेल. त्याचबरोबर प्रेमसंबंधांतही आपल्या भावुकतेचे प्रदर्शन कराल. सर्वसामान्यांच्या कल्याण कार्याशी निगडित राहाल आणि त्या निमित्ताने समाजाची सेवा करण्याची संधी मिळे. राजकारणात यशस्वी होऊ शकता कारण एक आदर्शवादी व्यक्ती आहात आणि निःस्वार्थ भावनेने कालानुरूप जनतेची सेवा कराल. उच्चाधिकार प्राप्त होऊ शकतो. शत्रूनी तुमची भावनिक कुचंबणा केली तर अतिशय उत्तेजित होऊन शत्रूचा नाश केल्याशिवाय चैन पडणार नाही. पण हे करतानासुद्धा आदर्श मार्गाचा अवलंब कराल आणि सत्याच्या मार्गानेच यश मिळवाल. आईवर विशेष माया असेल, तिची सेवा करण्यास तत्पर राहून तिला आपल्याकडून कोणतेही कष्ट होणार नाहीत याची काळजी घ्याल.

जलक्रीडा करण्याची आवड असेल आणि संधी मिळताच याचा आनंद घ्याल. सर्वांचे विचार ऐकून तत्वानुसारच चालाल. आयुष्यात चढउतार खूप असतील आणि संघर्ष करतच यशाकडे वाटचाल कराल. जातकाभरणम मध्ये म्हटल्याप्रमाणे

मिष्ठान्न भुक साधुरतो विनीतो विलोम बुद्धिर्जलकेलिशीलः।
प्रकृष्टसारोळतितरामुदारो लग्नेकुलरेहि नरो भवेद्यः।।

म्हणजे, कर्क लग्नाचा जातक मिष्ठान्न भोगी, साधुंची सेवा करणारा, तत्वग्राही, ईश्वरभक्त, जलक्रीडेचा शौकीन आणि उदार प्रकृतिचा असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये रविची सिंह राशी उदित आहे. याच्या प्रभावामुळे आपला स्वभाव मितभाषी असेल आणि अधिकांश काळ शांत राहाणे आवडते व गरज लागलीच तर बोलायला आवडते. वैभवशाली वस्तूंची प्राप्ती तसेच शुभ व मंगलकार्यांना संपन्न करण्यास तत्पर राहाल. कधी कधी शीघ्रकोपी व्हाल पण लगेच क्रोध शांतही होईल. कौटुंबिक शांती व खुशीसाठी नेहमी प्रयत्नरत राहाल आणि यत्नपूर्वक कुटुंबाला सर्व प्रकारच्या सुविधा देण्याचा प्रदान कराल. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल. त्याचबरोबर बहुमूल्य वस्तूनी संपन्न असाल.

आयुष्यात जमीन जायदादीसंबंधी लाभ होईल आणि गृह तसेच वाहनादि प्राप्त कराल. समाजाला आकर्षित करण्यासाठी मधूर वाणीचा वापर कराल. आपल्या स्पष्ट तर्कबुद्धीमुळे लोक तुम्च्याशी सहमत असतील. कुटुंबाव्यतिरिक्त इतरेजनांचेही पालनपोषण करण्यास समर्थ असाल. अशाप्रकारे आपण एक जागरूक, धार्मिक व परोपकारी व्यक्ती म्हणून समाजात मानसन्मान प्राप्त कराल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व कौटुंबिक जबाबदाऱ्या पूर्ण करण्यास तत्पर असेल. ती एक शांतीप्रिय महिला असेल आणि वादविवादापेक्षा शांत वातावरण पसंत करणारी असेल. आईचे आयुष्य भौतिक सुखसाधनानी युक्त असेल आणि आपल्या कौटुंबिक व सामाजिक जीवनामध्ये संतुष्ट असेल. त्याचबरोबर त्यांच्यामध्ये भावुकपणा व कल्पनाशीलता विद्यमान असेल तसेच कोणत्याही चुकांना क्षमा किंवा विसरून जाण्याची त्यांची प्रवृत्ती असेल.

आपले निवासस्थान सुंदर व आकर्षक असेल तसेच धनवानांच्या परिसरात असेल. त्याचबरोबर कुटुंब आपल्याला शांती व सहानुभूतीचे वातावरण मिळेल. आपल्या निवासस्थानाच्या सभोवती बाग तयार करण्याइतपत मोकळी जागा असेल. आपल्या साजसजावट करण्यामध्ये रस असेल आणि अशी साजसजावटीमध्ये प्रसन्नता वाटेल.

आयुष्यात आपल्याला वाहनसुख लाभेल आणि त्यांची संख्या एकपेक्षा अधिक असू शकते. त्याचबरोबर पैतृक संपत्ती किंवा मालमत्तादेखील मिळेल. प्रशासकीय क्षेत्रासंबंधी तसेच कायदा, विज्ञान, गणित किंवा संगणकादि क्षेत्रामध्ये यश व सन्मान प्राप्त होऊ शकतो. देवावर विश्वास असेल आणि आयुष्यामध्ये सहजसोप्या घडामोडीतून लाभ व सन्मान प्राप्त होत राहील. आपली प्रवृत्ती सौम्य, सत्कर्मी, शास्त्रज्ञाता, सुखोपभोगी असेल व पुत्रसंततीयुक्त असाल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित आहे. याच्या प्रभावामुळे आपण कल्पनाशक्ती बरोबरच कुशाग्र बुद्धिचे आहात. वास्तवात तुम्ही स्वतःसुद्धा तुमची योग्यता समजू शकत नाही. आपण सामान्यतः आपल्या विचारांसमोर इतरांचे विचार स्वीकार करत नाही. कोणताही सिद्धांत स्वीकारण्याअगोदर त्याची पूर्ण पडताळणी करणे हा तुमचा स्वभाव असल्याने इतरांचे व्यवच्छेदक विचार पटकन तुम्हाला पटत नाहीत.

प्रेमसंबंधांच्या बाबतीत आपण प्रबलता, प्रगतीशीलता तसेच ओजस्विताचा परिचय करून द्याल. आपली पत्नी तसेच भागीदाराला नेहमी प्रसन्न व संतुष्ट ठेवून पूर्ण सुखसुविधा देण्याचा प्रयत्न कराल. कुटुंब आनंदी राहावे, त्याला सन्मान प्राप्त व्हावा यासाठी आपण सदैव तत्पर असाल. आपली संतती अल्प असेल पण ती केवळ बुद्धिमानच नव्हे, तर भाग्यवानसुद्धा असेल. वृद्धावस्थेत आपली मुले तुमची हरतऱ्हेने सेवा करून तुम्हाला कष्ट होणार नाहीत याची काळजी घेतील. उच्च शिक्षण घेण्याचा नेहमी प्रयत्न करत राहाल आणि परिश्रमानी ते प्राप्तसुद्धा कराल. शासनाकडून करादि विषयासंबंधी त्रास होऊ शकतो, म्हणून प्रयत्नपूर्वक अशा समस्यांना अगोदरच तोड काढून ऐनवेळेची अवघड परिस्थिती टाळावी. वैदिक साहित्य, ज्योतिषादि विषयांमध्ये आपल्याला रूची राहील. वेळोवेळी धार्मिक कार्य करत राहाल. संतती सुंदर व सुशील असेल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण रोमान्सादि प्रकारामध्ये विशेष उत्सुक नसाल आणि सरस व सुगम कौटुंबिक जीवन जगण्याकडे कल असेल. प्रेमात आपण प्रामाणिक राहाल आणि आपल्या पत्नीला नेहमी संतुष्ट ठेवण्याचा प्रयत्न कराल.

आपल्या कुटुंबावर अतिशय प्रेम असेल आणि व्यवस्थित कुटुंबामध्ये आनंदाने राहाल. प्रसंगी आपल्या इच्छा दाबून पत्नीची हर एक इच्छा व गरजा पूर्ण करण्याकडे आपला कल राहील. त्यातून आपल्याला आनंद मिळेल. पत्नीने जर आपली उपेक्षा केली असे जाणवले तर मात्र असंतुष्टीचा भाव आपल्या मनामध्ये निर्माण होईल.

आपण संतुष्ट प्रवृत्तीचे असण्याबरोबरच स्पष्टवादी व्यक्ती असाल आणि परिस्थितीशी जुळवून घेण्यास समर्थ असाल. आपल्यासाठी कर्क, वृश्चिक किंवा मीन राशी किंवा लग्नामध्ये जन्मलेल्या जातकाशी विवाह करणे योग्य ठरेल. अशा जातकांशी विवाह झाला तर आपले दाम्पत्य जीवन सुखदायक जाईल. आपल्यासाठी व्यापार व्यवसाय उत्तम राहील. जहाज, वाहतूकसंबंधी तसेच आयात–निर्यातासंबंधी कार्यामध्ये इच्छित लाभ व उन्नती होईल. राजकारणामध्ये जायला इच्छुक असाल तर तिथेही यश मिळू शकून इच्छित पद व मानसन्मान व कीर्ती प्राप्त करू शकता. आपली पत्नी स्वाभिमानी, उग्र स्वभावाची असेल, पण आपल्याशी सामंजस्य ठेवून दाम्पत्य जीवन सुखी करेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले वडील निरोगी, सज्जन व बुद्धिमान पुरूष असतील आणि त्यांचे पूर्ण सुख, सहयोग व माया प्राप्त होईल. त्यांची प्रवृत्ती स्वच्छंद असेल आणि कधी कधी उग्रत्वाचे प्रदर्शन करतील. त्याचबरोबर ते एक महत्वाकांक्षी आणि आकर्षक व्यक्तिमत्वाचे असतील. तुम्च्यासाठी पोलिस, सेना, संरक्षण विभाग उपजीविकेसाठी अनुकूल क्षेत्र असेल. काळानुसार आपण हॉटेल किंवा मालमत्ता व वाहनासंबंधी व्यापारातून अपेक्षित लाभ प्राप्त करू शकाल. त्याचबरोबर सिंचन किंवा ऊर्जा विभाग अथवा सजरी किंवा वैद्यकीय क्षेत्रसुद्धा आपल्यासाठी शुभ असेल. वरील क्षेत्रापैकी कोणत्याही क्षेत्र कार्यक्षेत्र म्हणून निवडले तर त्यामध्ये अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त होईल. धनऐश्वर्याच्या बाबतीत आपण अत्यंत सतर्क राहाल आणि स्वकष्ट व पराक्रमाने इच्छित धनप्राप्ती करण्यास यश प्राप्त कराल.

राजनीतिमध्ये योग्य स्थान प्राप्त करू शकाल कारण आपल्या कूटनीत्या प्रभावामुळे राजनैतिक क्षेत्रामध्ये यश प्राप्त करू शकाल. विमानवाहतूकादि मध्ये सुद्धा काम करण्यास उत्सुक असाल आणि सरकार किंवा उच्चाधिकारी वर्गापर्यंत आपले वजन असेल. मशीन, कारखाना, क्रीडासामानातून सुद्धा आपल्याला लाभ होईल. संघटनशक्तीसुद्धा आपल्यामध्ये असेल.

फलादेश - 2026

यंदा गुरु गोचरीने बाराल्या भावात आहे. तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. वेळप्रसंगी त्रास संभवतो. आर्थिक स्थिती पण चांगळी नसेळ. खर्च जास्त असतीळ. यंदा चांगल्या वाईट खर्चांमुळे आर्थिक विषमता अनुभवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात अडचणी येतीळ. तरी कष्टाने सफळता मिळेळ. यंदा प्रवासांवर खर्च होईळ व त्रासपण संभवतो. म्हणून प्रवास टाळावे.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ नाही. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रम करावे ळागतीळ. मगच सफळता मिळेळ. म्हणून प्रतिकूळ काळ असल्याने नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत, दानादि कार्य करावे.

यंदा शनी गोचरीने आठव्या भावात आहे. त्यामुळे तुम्हाळा वातजनित रोगांमुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर मानसिक दृष्टया अस्वस्थता असेळ. ह्या काळात दैनंदिन कार्यात कष्ट व संघर्ष कराव ळागेळ. सफळता पण कमीच मिळेळ. कार्यक्षेत्रात वेळोवेळी अडथळे येतीळ. बुद्धीपूर्वक कार्य सम्पन्न करावे. यंदा दाम्पत्य जीवनात तणावाची शक्यता आहे. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होईळ. बांधव व कुटुंबियांशी तुमचे संबंध चांगळे रहाणार नाहीत. मानसिक तणाव राहीळ. ह्याशिवाय यंदा अन्य गोचर व दशा अनुकूह नाही. त्यामुळे उन्नती मध्ये अडथळे येतीळ. दैनंदिन कार्यात अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानंतरच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेमुळे अडचणी उद्भवतीळ. म्हणून शनीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मध्यल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्याचया प्रभावाने हे वर्ष चांगळे जाणार नाही. ह्या काळात शारीरिक व मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. त्याचबरोबर पत्नीची प्रकृती मध्यम असेळ, परस्पर मतभेदांमुळे तणाव निर्माण होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिभमाने संपन्न होतीळ. त्यानंतरच थोडाफार ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. अधिक खर्चामुळे त्रास संभवतो. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात ह्या काळात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकान्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क रहावे. ह्या काळात सर्व कार्यो बुद्धीपूर्वक संपन्न करावी.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण शुभ नाही. त्यामुळे त्रास संभवतो. धनप्राप्ती मध्ये अडथळे येतीळ. त्यामुळे शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमिपणे राहूकेतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र सप्तं भाव मधीं मकर राशि मधीं स्थित आहात पण चन्द्र द्वितीय भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः विशेष कार्य प्रयोजने सफल नाय होणारी तसेच व्यापार मधे उन्नति मार्ग अव द्ध रहणारे. नवीन कार्य मधे अडचणे उत्पन्न होणारी नौकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो तसेच अधिकारयां बरोबर मतभेद रहणार. आर्थिक स्थिति प्रतिकूल रहणारी आणि कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होणार कुटुम्ब सुख–शान्ती मध्यम रहणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. समाजातीळ

प्रतिष्ठा, यश प्राप्त होणार. अतः ह्या वेळी बुद्धि आणि संयम बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2027

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात तुमच्या पराक्रमात वाढ़ होईळ व सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांचा समर्थपणे पराभव कराळ. यंदा एरवादी परीक्षा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. हे वर्ष आर्थिकदृष्टया अनुकूल असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छावृद्धीमुळे मानसिक त्रास संभवतो. पण अन्य गोचर व दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष मंगळ ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ चन्द्र ची महादशा मधीं शुक्र चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति मंगळ ची महादशा मधीं मंगळ चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी पंचम भाव मधीं वृश्चिक राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः ह्या वेळी तुमचे सर्व शुभ कार्य सम्पन्न होणार आणि वांछित सफळता भेंटणारी आणि अडचणे निवारण कराय साठी सफळ रहणारे. समाजातीळ सम्पर्क स्थापित होणार तसेच इच्छित सहयोग भेंटणार, कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी तसेच परस्पर सहयोग भेंटणार. काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार मित्र वर्ग सहयोग करणारे आणि वांछित लाभ होणार अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आहे तसेच शुभ अवसर प्राप्त होणार. आर्थिक

स्थित चांगली आणि धन लाभ प्राप्त करणारे व्यवहार अनुसरण क न लाभ आणि उन्नती मार्ग वर प्रवास करणारे. नोकरी मधे उन्नती होऊ सकतो मोठे अधिकारयां पासून चांगले संवन्ध स्थापित होणार कुटुम्ब मधे परस्पर सहयोग रहणार सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी. ह्या प्रकारी शुभ समय चा सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावने शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात अनावश्यक चिंता व त्रासापासून मुक्ती मिळेळ. प्रेम–प्रकरणाची शक्यता आहे. त्याचबरोबर मुळांकडून सुख मिळेळ. त्यांची प्रकृती उत्तम असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. अनायासपणे धनप्राप्तीचे योग आहेत. कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व राजकारणातीळ एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी किंवा उच्चाधिकान्याशी संपर्क स्थापित होईळ. ज्यापासून भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

मंगळ ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 11/03/2028 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ पंचम भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहे। पण राहु दशम् भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आहे तसेच शुभ अवसर प्राप्त होणार. आर्थिक स्थित चांगली आणि धन लाभ प्राप्त करणारे व्यवहार अनुसरण क न लाभ आणि उन्नती मार्ग वर प्रवास करणारे. नोकरी मधे उन्नती होऊ सकतो मोठे अधिकारयां पासून चांगले संवन्ध स्थापित होणार कुटुम्ब मधे परस्पर सहयोग रहणार सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी. ह्या प्रकारी शुभ समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर

मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व ळाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून ळोक तुमच्या बोळण्याकडे ळक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्याविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावने शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात अनावश्यक चिंता व त्रासापासून मुक्ती मिळेळ. प्रेम–प्रकरणाची शक्यता आहे. त्याचबरोबर मुळांकडून सुख मिळेळ. त्यांची प्रकृती उत्तम असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. अनायासपणे धनप्राप्तीचे योग आहेत. कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व राजकारणातीळ एखाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी किंवा उच्चाधिकान्याशी संपर्क स्थापित होईळ. ज्यापासून भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

मंगळ ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 30/03/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु दशम् भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु अष्ट् भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफळ होणारी आणि कार्य क्षेत्र मधे सफळता भेंटणारी. नौकरी मधे उन्नति होउ सकतो तसेच लाभ मार्ग भेंटणार अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे सुख सहयोग आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार तसेच प्रभावशाली माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार आणि इच्छित लाभ आणि सहयोग भेंटणार. समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा भेंटणार आणि समाज प्रभावित होणार. अतः समय सदुपयोग कराय साठी प्रयत्न करावे. बायको चा स्वास्थ्य अनुकूळ रहणार, जोखम कार्य पासून सावध रहावे.

हा समय तुमचा सामान्य शुभ रहणार पण शुभ फळ जास्ती भेंटणार. व्यापार मधे

शुभ फळ प्राप्त होणार नौकरी मधे पदोन्नती होउ सकतो अधिकारयां बरोबर चांगला सम्बन्ध रहणार आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन करणारे. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती रहणारी तसेच परस्पर सहयोग भेंटणार. परा विद्या मधे चि उत्पन्न होणारी आणि अनुभव प्राप्त करणारे. धार्मिक संत महात्मा आणि विद्वान बरोबर संवन्ध स्थापित होणार अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2030

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष उन्नतीकारक असेळ. ह्या काळात व्यापरात उन्नती किंवा महत्वाचे बदळ संभवतात. त्याचबरोबर राजकीय क्षेत्रात महत्वाचे पद मिळेळ. राजकारणातीळ महत्वाच्या ळोकांशी संपर्क येईळ. नोकरीत पदोन्नतीची प्रबळ शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. पण प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. ह्या काळात रक्तचापासंबंधी त्रास उद्भवव्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असल्याने सुखातीळा त्रास झाळा तरी शेवटी चांगळी फळे मिळतीळ.

गोचरीने यंदा राहू यतुर्थात व केतू दशमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः सुखाचे असेळ. ह्या काळात प्रसन्नता अनुभवाळ व वेळ आनंदात व्यतीत कराळ. यंदा जमीनीची किंवा वाहनाची खरेदी–विक्री करण्याची संभावना आहे. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. परंतु आई–वडिळांकरता हे वर्ष मध्यम असेळ. त्यांना शारीरिक किंवा मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. यंदा तुमचे प्रवासाचे योग आहेत. ह्या काळात गोचरफळ चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे सुखातीळा शुभ फळे कमी वाटळी तरी शेवटी ती वाढतीळ.

मंगळ ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 05/03/2030 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु अष्ट्ं भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहे। पण शनि पंचम भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारे आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय रहणार अतः शुभ आणि विशेष कार्य मधे सफळता नाय भेंटणारी. जूने कार्य पूर्ण नाय होणारे कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी कमी तसेच

परस्पर मतभेद उत्पन्न होणार आर्थिक स्थिति प्रतिकूल रहणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो. व्यापार आणि उन्नती मार्ग मधे अडचणे येणारी आणि नवीन प्रयोजने सफळ नाय होणारी, नौकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी सहयोग नाय देणारे अतः धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.